पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 2

पौलुस और कुलुस्सियों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भो में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.....1
पृष्ठभूमि.....1
संबंध.....2
कलीसिया.....2
विशेष लोग.....3
कुलुस्से में समस्याएं.....4
यूनानी दर्शनशास्त्र.....4
यहूदी व्यवस्था.....6
आकाशीय आत्मिक प्राणी.....7
संरचना और विषय-वस्तु.....10
अभिवादन.....10
उत्साह.....10
अंतिम अभिनंदन.....10
मसीहियत की सर्वोच्चता.....11
मसीह की सर्वोच्चता.....11
मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता.....14
मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता.....16
मसीही जीवन की सर्वोच्चता.....18
आधुनिक प्रयोग.....20
मसीह के प्रति वफादारी.....20
आत्मिक केन्द्र.....22
उपसंहार.....25

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय दो

पौलुस और कुलुस्सियों

परिचय

अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन के द्वारा लिखी गई एक बहुत ही प्रसिद्ध कहानी है जिसका नाम है, "द प्रिंस एंड द पाँपर" (हिन्दी में राजा और रंक)। इस कहानी में एक राजकुमार एक गरीब भिखारी को अपने महल में खेलने के लिए बुलाता है, दोनों अपने कपड़े बदलते हैं। जैसे कहानी आगे बढती है, भिखारी को राजकुमार समझ लिया जाता है और उसे महल के भीतर रखा जाता है और वह राजकुमार का जीवन जीने लगता है।

परन्तु दुखद रूप से राजकुमार को भिखारी समझ लिया जाता है और उसे महल से बाहर फेंक दिया जाता है। अब यदि राजकुमार को पहले से मालूम होता कि उसे महल से बाहर फेंक दिया जाएगा, तो मुझे यकीन है कि वह उस भिखारी के साथ अपने कपड़े बदलने को कभी सहमत नहीं होता। ऐसे साधारण खेल की तुलना इतने बड़े नुकसान से कभी नहीं की जा सकती।

कुछ रूपों में कुलुस्से की स्थिति पहली सदी में "द प्रिंस एंड द पाँपर" की कहानी के समान थी। कुलुस्से के मसीहियों को इस परीक्षा में डाला जा रहा था कि वे मसीह में पाए जाने वाले सौभाग्यों को आराधना के गैरमसीही तरीकों से बदल लें। अत: पौलुस ने कुलुस्सियों के लोगों को मसीह में अपार समृद्धि और राजकीय सौभाग्य का आनन्द उठाने का स्मरण दिलाने और मूर्तिपूजा से मिलने वाले झूठे लाभों से इन आशीषों को बदल लेने के परिणामों की चेतावनी देने के लिए पत्र लिखा।

यह हमारी श्रृंखला "पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियां" का दूसरा अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है "पौलुस और कुलुस्सियों"। इस अध्याय में हम पौलुस द्वारा पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाली कुलुस्सियों को लिखी पत्री का अध्ययन करेंगे। जैसा कि हम देखेंगे, इस पत्री में पौलुस ने उस झूठी शिक्षा के विरुद्ध कड़ाई से प्रत्युत्तर दिया जिसने मसीही आराधना में निम्नतर आत्मिक प्राणियों की आराधना को आरंभ कर दिया था।

पौलुस और कुलुस्सियों का हमारा अध्ययन तीन भागों में बंटा होगा। पहला, हम पौलुस द्वारा कुलुस्सियों को लिखी पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। दूसरा, हम कुलुस्सियों को लिखी उसकी पत्री की संरचना एवं विषय-वस्तु का आकलन करेंगे। और तीसरा, हम इस पत्री के आधुनिक प्रयोग पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले हम कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की ओर मुड़ें।

पृष्ठभूमि

पौलुस यीशु मसीह का एक प्रेरित था, एवं पत्र लिखना मसीह के प्रतिनिधि के रूप में उसकी आधिकारिक सेवकाई का एक पहलू था। प्रेरित होने का दूसरा पहलू कलीसियाओं और लोगों की पासवानी करना था। और इसलिए पौलुस के पत्र आधिकारिक शिक्षण के संकलन मात्र ही नहीं थे। बल्कि, वे व्यक्तिगत और पासवानीय थे, और कलीसियाओं एवं लोगों जिनको उसने वे पत्र लिखे थे, उनके प्रति प्रेम और चिंता से प्रेरित थे। और पौलुस के पत्र "विषय पर आधारित" थे। अर्थात्, विशेष समयों और स्थानों में विशेष विषयों को संबोधित करने के लिए उन्हें लिखा गया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अत:, जब हम कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री का अध्ययन करते हैं, तो हमें उस अवसर या कारण के बारे में जानना महत्वपूर्ण है जिसने पौलुस को लिखने के लिए प्रेरित किया। हमें इस प्रकार के प्रश्न पूछने हैं- कुलुस्सियों ने कौनसी समस्याओं का सामना किया? उनको लिखने के लिए पौलुस को किस बात ने प्रेरित किया?

हम दो दिशाओं से कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि की जांच करेंगे। पहले, हम सामान्य रूप में कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ और कलीसिया के कुछ लोगों के साथ उसके संबंध के कुछ विवरणों का उल्लेख करेंगे। और फिर, हम कुलुस्से की कुछ समस्याओं की जांच करेंगे जिनको पौलुस संबोधित करता है। आइए, कुलुस्सियों के साथ पौलुस के संबंध को देखने के साथ आरंभ करें।

संबंध

पौलुस का कुलुस्से के प्रत्येक मसीही के साथ एक जैसा संबंध नहीं था, अत: हम पहले सामान्य रूप से कलीसिया के साथ उसके संबंध पर ध्यान देंगे, और फिर विशेष लोगों के साथ उसके संबंध पर। आइए, पहले हम कुलुस्से की कलीसिया के साथ उसके संबंध की ओर मुड़ें।

कलीसिया

कुलुस्से नगर फ्रूगिया नामक क्षेत्र में एशिया के रोमी प्रान्त में स्थित था। यह लिकुस घाटी में आता था जो और अधिक विशाल और लोकप्रिय नगर लौदिकिया की पूर्व दिशा में थी। तुलनात्मक रूप से कुलुस्से छोटा था। और उस समय के राजनीतिक एवं आर्थिक स्तरों के आधार पर यह निश्चित: पौलुस की पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली पत्रियों में से सबसे कम महत्वपूर्ण था। पौलुस ने वास्तव में कभी इस कलीसिया से भेंट नहीं की थी, परन्तु फिर भी उसे उनकी बहुत परवाह थी। कुलुस्सियों 2:1 में उसके शब्दों को सुनें :

> मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ। (कुलुस्सियों 2:1)

अब पौलुस दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के दौरान फ्रूगिया से होकर निकला था, परन्तु किन्हीं कारणों से उसने कुलुस्सियों की कलीसिया से भेंट नहीं की थी। संभवतया, वहां कलीसिया की स्थापना से पहले वह कुलुस्से गया होगा। या शायद वह उस नगर में तो गया हो परन्तु उसे कलीसिया से मिलने का अवसर न मिला हो। यह भी संभव है कि वह कभी कुलुस्से के नगर में गया ही न हो। चाहे जो भी हो, पौलुस उन अधिकांश विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था।

फिर भी, हम पौलुस द्वारा उनको लिखी पत्री और फिलेमोन, जो कुलुस्से में रहता था, को लिखी उसकी पत्री के विवरणों से कुलुस्सियों के साथ उसके संबंध के विषय में कुछ बातें सीख सकते हैं। पहली बात हम यह पढ़ते हैं कि अपने प्रतिनिधियों इपफ्रास, फिलेमोन और उनेसिमुस एंव उसके संदेशवाहक तुखिकुस के माध्यम से पौलुस का कुलुस्सियों के साथ अप्रत्यक्ष संबंध था।

दूसरा, यद्यपि वे आमने-सामने नहीं मिले थे, पौलुस और कुलुस्सियों ने पत्राचार के द्वारा संबंध रखा था। उदाहरण के तौर पर, इपफ्रास पौलुस के पास कुलुस्सियों के विवरण लेकर आया था। और पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया को कम से कम एक पत्री लिखी थी, अर्थात् नए नियम की कुलुस्सियों की पत्री।

तीसरा, पौलुस और कुलुस्सियों ने एक-दूसरे के प्रति सेवकाई की थी। उदाहरणत: उनके लिए कारावास में संघर्ष करने के अतिरिक्त पौलुस ने विशेष रूप से कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की थी। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 1:9 में लिखा :

> इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनती करना नहीं छोड़ते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। (कुलुस्सियों 1:9)

पौलुस ने विशेष रूप से निरन्तर कुलुस्सियों के लिए प्रार्थना की और उन आशीषों को मांगा जो वह जानता था कि उन्हें बहुत लाभ प्रदान करेंगी।

चौथा, कुलुस्सियों ने भी पौलुस के प्रति सेवकाई की। हमें पौलुस द्वारा कुलुस्सियों और फिलेमोन को लिखी पत्री से जानकारी मिलती है कि कलुस्सियों में से इपफ्रास और उनेसिमुस ने कारावास में पौलुस से भेंट की थी। और क्योंकि कुलुस्सियों की कलीसिया ने पौलुस के पास संदेशवाहक भेजे थे इसलिए यह अनुमान लगाना तर्कसंगत है कि उन्होंने भी पौलुस के लिए प्रार्थना की थी।

सारांश में, यद्यपि पौलुस कभी कुलुस्सियों के अधिकांश विश्वासियों से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिला, फिर भी उनमें एक दूसरे के प्रति लगाव और सहानुभूति थी जिससे उनका संबंध वास्तविक और मजबूत हो गया था।

कुलुस्से की कलीसिया के साथ पौलुस के संबंध को देखने के पश्चात् अब हमें कुलुस्सियों की कलीसिया में उन विशेष लोगों के साथ उसके संबंध पर ध्यान देना चाहिए जिनके साथ वह अधिक परिचित था।

विशेष लोग

कुलुस्से में पौलुस के कुछ मित्र थे। वे केवल ऐसे लोग नहीं थे जिनसे उनकी मात्र जानकारी थी, बल्कि वे व्यक्तिगत मित्र थे, जिनमें से अधिकांश ने पौलुस के साथ सुसमाचार की सेवकाई में परिश्रम किया था। तीन ऐसे मित्र थे, फिलेमोन, अफफिया और अरखिप्पुस। फिलेमोन पद 1 और 2 में पौलुस के शब्दों को सुनें जो पत्री के अभिवादन की रचना करता है :

> पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है, और भाई तिमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। और बहिन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम। (फिलेमोन 1-2)

कम से कम फिलेमोन पौलुस का घनिष्ठ मित्र था। और पौलुस द्वारा अफफिया का उल्लेख करना यह दर्शाता प्रतीत होता है कि वह उसे भी जानता था। कुछ विद्वान मानते हैं कि वह फिलेमोन के परिवार की सदस्या थी- शायद उसकी पत्नी। क्योंकि अरखिप्पुस कलीसिया में काफी सम्मानित व्यक्ति था पौलुस द्वारा उसका संबोधन सम्मानसूचक हो सकता है। परन्तु ऐसा भी संभव है कि वह भी फिलेमोन के परिवार का भाग हो, शायद उसका पुत्र।

कुलुस्से से पौलुस का अन्य मित्र इपफ्रास था। पौलुस ने इपफ्रास का वर्णन अपने सहकर्मी और सहकैदी के रूप मे किया, और यह भी उल्लेख किया कि इपफ्रास मसीह का विश्वासयोग्य सेवक था। जब पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया को पत्र भेजा तो इपफ्रास पौलुस के साथ कारागृह में रहा।

पौलुस का मित्र उनेसिमुस भी कुलुस्से से था। उनेसिमुस एक दास था जिसने फिलेमोन की संरक्षा से भागने के बाद पौलुस को खोजने का प्रयास किया प्रतीत होता है और अंत में उसने कारागृह में पौलुस की सेवा की।

पौलुस के अधिकांश मित्र किसी न किसी तरह से फिलेमोन से जुड़े प्रतीत होते हैं। परन्तु एक-दूसरे के साथ उनका संबंध कुछ भी हो, यह स्पष्ट है कि सामान्य रूप में कुलुस्से की कलीसिया की अपेक्षा इन मित्रों के साथ पौलुस का संबंध अधिक करीबी था। परन्तु जैसे कुलुस्सियों को लिखी उसकी पत्री दर्शाती है, यह भी स्पष्ट है कि इन मित्रों के साथ उसके संबंध ने कुलुस्से के सभी विश्वासियों के लिए उसके प्रेम को बढ़ा दिया था।

अत: सामान्य रूप से कहें तो कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ पौलुस का बहुत ही कम व्यक्तिगत संबंध था। परन्तु उसने इसके अनेक सदस्यों की बहुत अधिक एवं व्यक्तिगत रूप से परवाह की थी। उनकी कलीसिया के लिए उसकी संवेदनाएं गहरी थीं, केवल इसलिए नहीं कि वह एक प्रेरित था परन्तु अपने मित्रों के साथ उसके संबंध के कारण भी।

कुलुस्सियों की कलीसिया के साथ सामान्य रूप में और कुलुस्से के विशेष लोगों के साथ पौलुस के संबंधों को जांचने के पश्चात् हम कुलुस्से की उन समस्याओं की जांच करने के लिए तैयार हैं जिनको पौलुस ने संबोधित किया। उन्होंने किन समस्याओं का सामना किया? किस बात ने पौलुस को प्रेरित किया कि वह उन्हें पत्र लिखे?

कुलुस्से में समस्याएं

जब पौलुस कारागृह में था, तो इपफ्रास नामक एक व्यक्ति ने उससे भेंट की जो कुलुस्से नगर का रहने वाला था। और इपफ्रास ने पौलुस को कुछ झूठी शिक्षाओं के बारे में बताया जो लिकुस घाटी की कलीसियाओं, जिसमें कुलुस्से की कलीसिया भी शामिल थी, के लिए खतरा बन रहीं थीं। अत: इन झूठी शिक्षाओं से कलीसिया की सुरक्षा करने के लिए पौलुस ने कुलुस्सियों को पत्री लिखी। यद्यपि हम उन भ्रांतियों के सभी विवरणों से परिचित नहीं हैं जो कुलुस्से की कलीसिया में आ गई थीं, परन्तु फिर भी पौलुस की पत्री उसके विषय में अनेक बातें बताती हैं। पहला, कुलुस्से में फैली झूठी शिक्षा ने संभवत: मसीहियत को यूनानी दर्शनशास्त्र के तत्वों के साथ मिला दिया था। दूसरा, यह यहूदी व्यवस्था पर बहुत अधिक आश्रित थी। और तीसरा, इसने बल दिया कि ऐसे अनेक आत्मिक प्राणी हैं जिनकी आराधना करना और जिनको प्रसन्न करना मसीहियों के लिए आवश्यक है। आइए, पहले हम उसकी शिक्षा के उन पहलुओं की ओर देखें जो यूनानी दर्शनशास्त्र से संबंधित थे।

यूनानी दर्शनशास्त्र

पहली सदी के भूमध्यसागरीय संसार में एक ओर धार्मिक चिन्तन एवं दूसरी ओर बौद्धिक अध्ययन में कोई स्पष्ट अन्तर नहीं था। और फलस्वरूप शब्द दर्शनशास्त्र का प्रयोग गुप्त धर्मों के लिए किया जाता था, विशेषकर उनके लिए जो धार्मिक परंपराओं पर निर्भर थे। प्राय: इन परंपराओं में खास रहस्य और रस्में शामिल होती थीं, और इनके साथ-साथ गुप्त ज्ञान और बुद्धि भी। दुर्भाग्यवश, कुछ ऐसे ही दर्शनशास्त्र कुलुस्से की कलीसिया में प्रवेश कर रहे थे। हम कुलुस्सियों 2:1-4 में इस विषय पर पौलुस की चिंता को देख सकते हैं :

> मैं कैसा परिश्रम करता हूँ... ताकि तुम परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहिचान लो जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे हुए हैं... कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। (कुलुस्सियों 2:1-4)

यहां पर पौलुस के शब्द दर्शाते हैं कि कुलुस्सियों के लोग रहस्यों, बुद्धि और ज्ञान को महत्व देते थे, इन सब बातों को यूनानी दर्शनशास्त्र और धर्म भी महत्व देते थे। अत: कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के

दावों के प्रत्युत्तर में पौलुस ने बल दिया कि सच्चे रहस्य, बुद्धि और ज्ञान गैरमसीही धर्मों में नहीं परन्तु केवल मसीह में पाए जाते हैं।

फिर कुलुस्सियों 2:8 में पौलुस ने गैरमसीही दर्शनशास्त्र को अपना निशाना बनाया और बिल्कुल सीधे शब्दों में इसकी निन्दा की :

> चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

यहां पौलुस ने झूठी शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से खोखला और कपटी दर्शनशास्त्र कहा। जिस प्रकार हम देख चुके हैं, विशिष्ट यूनानी प्रयोग में शब्द दर्शनशास्त्र परंपराओं पर आधारित धार्मिक चिन्तन को दर्शाता है, न कि बौद्धिक या विवेकपूर्ण अध्ययन को।

ये पद इस बात पर बल देते हैं कि कुलुस्से के झूठे शिक्षक यूनानी धर्म और गुप्त रहस्यवाद पर आधारित धारणाओं और क्रियाओं के जाल में फंस गए थे। कलीसिया में मंजूरी प्राप्त करने के लिए शायद उन्होंने मसीहियत के कुछ पहलुओं को भी अपना लिया था। परन्तु स्पष्टत: उन्होंने मसीहियत को वैसे स्वीकार नहीं किया था जैसा प्रेरितों ने सिखाया था, नहीं तो वे अपनी विचारधारा के आधार के रूप गुप्त परंपरा पर निर्भर नहीं हुए होते।

कुलुस्से के झूठे शिक्षकों द्वारा सिखाए गए गैरमसीही दर्शनशास्त्र में सन्यास-संबंधी के तत्व भी शामिल प्रतीत होते हैं। सन्यास भौतिक आनन्द को अनुचित रूप से टालने की क्रिया है। इसकी बुनियाद प्राय: इस गलतफहमी में पाई जाती है कि आनन्द अनैतिक है, और यह क्रिया कभी-कभी यहां तक बढ़ जाती है कि यह स्वयं को शारीरिक वेदना पहुंचाने का सुझाव देती है। कुलुस्सियों 2:20-23 में पौलुस ने ऐसे सन्यास की भर्त्सना की, उसने लिखा :

> जब कि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर... ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो? कि यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना... इन विधियों में... शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (कुलुस्सियों 2:20-23)

पौलुस ने कम से कम दो कारणों से कुलुस्से में सन्यासी क्रियाओं का विरोध किया। पहला, उनकी सन्यास क्रिया संसार के आधारभूत सिद्धांतों पर आधारित थी। जिस प्रकार हम इस अध्याय में आगे देखेंगे, यह भाषा आकाशीय आत्मिक प्राणियों और आकाशीय शक्तियों को दर्शाती है। दूसरा, पाप का विरोध करने में इसका कोई महत्व नहीं था अत: इससे कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

सारांश में, कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने कलीसिया की उन शिक्षाओं को यूनानी परंपराओं के साथ जोड़ने का प्रयास किया जो विश्वासियों को परीक्षा के विरुद्ध बुद्धि और सामर्थ देने वाली थीं। परन्तु वास्तव में जो बुद्धि वे देने की बात कर रहे थे वह झूठी बुद्धि थी, उनकी क्रियाएं व्यर्थ थीं, और उनकी शिक्षाओं ने मसीह की सर्वोच्चता या प्रधानता का इनकार कर दिया था।

यूनानी दर्शनशास्त्र को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने यहूदी व्यवस्था पर आधारित कई क्रियाओं को भी शामिल कर दिया था। फिर भी, यहूदी व्यवस्था का उनका प्रयोग और समझ पारंपरिक यहूदी धर्म और उचित मसीही क्रियाओं से बहुत अलग व दूर थे।

यहूदी व्यवस्था

जिस प्रकार हमने दूसरे अध्यायों में देखा है, पौलुस मूसा की व्यवस्था को थामे रहा। और सुसमाचार की बढ़ोतरी के लिए वह अनेक पारंपरिक यहूदी क्रियाओं को स्वीकार करने और उनमें शामिल होने के लिए तैयार था। अत: यदि कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने वैध रीति से व्यवस्था को लागू किया होता तो पौलुस ने उनके द्वारा इसके प्रयोग की आलोचना न की होती। उसकी आलोचनाएं दर्शाती हैं कि झूठे शिक्षक यहूदी शिक्षाओं और क्रियाओं का प्रयोग गलत तरीकों से कर रहे थे।

कुलुस्सियों 2:16 में पौलुस ने उन अनेक यहूदी क्रियाओं का उल्लेख किया जिनका झूठे शिक्षकों ने गलत प्रयोग किया था :

> इसलिये खाने पीने या पर्व या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। (कुलुस्सियों 2:16)

स्पष्टत: कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था से ली गई कुछ शिक्षाओं पर बल दिया। इनमें यहूदी पंचाग का अनुसरण जैसे कि यहूदी त्यौहारों को मनाना, नए चांद का पर्व और सब्त के दिन का पालन करना एवं खान-पान की सीमितताओं का पालन करना शामिल थे। परन्तु उन्होंने पुराने नियम की इन क्रियाओं का पालन उस रीति से नहीं किया जिस प्रकार मूसा की व्यवस्था बताती है। न ही उन्होंने उन्हें उस प्रकार से लागू किया जैसे प्रेरितों ने किया था। इसके विपरीत, पौलुस ने स्पष्ट किया कि उनकी क्रियाओं ने पुराने नियम की व्यवस्था को विकृत कर दिया एवं उनका अनुसरण करने वालों के अनन्त लक्ष्यों (की अनन्त नियति) को खतरे में डाल दिया। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 2:17-18 में लिखा :

> क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं। कोई मनुष्य आत्म-हीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। (कुलुस्सियों 2:17-18)

मूसा की व्यवस्था ने पवित्र दिनों को स्वर्गदूतों की आराधना के साथ नहीं परन्तु परमेश्वर की आराधना के साथ जोड़ा था। और उसने विशेष खान-पान का सुझाव दीनता एवं सन्यास के माध्यम के रूप में नहीं परन्तु परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में अलग ठहराए जाने के चिन्ह के रूप में दिया था। किन्तु झूठे शिक्षकों ने इन नियमों को भ्रष्ट कर दिया था और उनका प्रयोग मूर्तिपूजक आराधना और गैरमसीही सन्यासवाद में किया था।

कुलुस्सियों 2:11-12 में पौलुस ने झूठे शिक्षकों द्वारा गलत रूप से प्रयोग किए यहूदी नियमों की सूची में खतने को भी शामिल किया :

> उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना... और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए। (कुलुस्सियों 2:11-12)

स्पष्टत: कुलुस्से के झूठे शिक्षक मसीही खतने के एक प्रारूप का सुझाव दे रहे थे। अत: पौलुस ने कुलुस्सियों को यह सिखाने के लिए खतने और मसीही बपतिस्मे को एक साथ जोड़ा कि क्योंकि उन्होंने बपतिस्मा ले लिया है इसलिए उन्हें खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है।

सारांश में, कुलुस्सियों में पौलुस ने मूसा की व्यवस्था के गलत प्रयोग के विरुद्ध लिखा; उसने व्यवस्था के विरुद्ध नहीं लिखा। दूसरी जगह पर पौलुस ने पुष्टि की कि मूसा की व्यवस्था मसीही नैतिकता और क्रिया के लिए उचित आधार है और यह परमेश्वर के बारे में अनेक सच्ची बातें सिखती है। परन्तु यहां कुलुस्सियों में उसने झूठे शिक्षकों की विशेष शिक्षाओं और क्रियाओं का खण्डन करने पर

ध्यान दिया, और यह उसने व्यवस्था की विधियों को उनके द्वारा भ्रष्ट किए जाने की निन्दा करने एवं इस बात पर बल देने के द्वारा किया कि कलीसिया इन भ्रष्ट क्रियाओं को ठुकरा दे।

यूनानी दर्शनशास्त्र को लागू करने और यहूदी व्यवस्था पर आधारित क्रियाओं को स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने आकाशीय आत्मिक प्राणियों की आराधना को बढ़ावा दिया और मसीहियों को उत्साहित किया कि वे इन शक्तियों की आराधना करें व उनको प्रसन्न करें।

आकाशीय आत्मिक प्राणी

तीन रूपों में यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कुलुस्सियों की कलीसिया आत्मिक शक्तियों की आराधना के खतरे में थी। पहला, पौलुस ने स्वर्गदूतों की आराधना के विषय में लिखा था। दूसरा, उसने शासकों और अधिकारियों के विषय को संबोधित किया था। और तीसरा, उसने इस संसार के आधारभूत सिद्धांतों से संबंधित समस्याओं के बारे में बात की थी। हम स्वर्गदूतों की आराधना के उसके उल्लेख पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ करेंगे।

बाइबल के अनुसार स्वर्गदूत परमेश्वर के सेवक हैं। और उन्होंने सदैव सृष्टि में भूमिका अदा की है। परमेश्वर उन्हें आत्मिक युद्ध से लेकर राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने, अपने लोगों तक संदेश पहुंचाने, विश्वासियों की भौतिक जरुरतें पूरी करने तक के अनेक कार्य सौंपता है। और प्रारंभिक कलीसिया इन भूमिकाओं के विषय में पूरी तरह से अवगत थी। जिस प्रकार हम इब्रानियों 1:14 में पढ़ते हैं :

> क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी जाती हैं? (इब्रानियों 1:14)

स्वर्गदूत वास्तव में सेवा करने वाली आत्माएं हैं, और इसलिए उनके कार्य को पहचानना महत्वपूर्ण है। परन्तु कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के अनुसार स्वर्गदूत सेवा करने वाली आत्माओं से कहीं बढ़कर थे, वे आकाशीय शक्तियां थे, ऐसी वाणियां थे जो उन लोगों के समक्ष रहस्मयी शिक्षाओं को प्रकट करेंगे जो उनके लिए रस्मीय क्रियाएं करेंगे और उनकी आराधना करेंगे। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:18 में इन क्रियाओं की निन्दा की, जहां उसने लिखा :

> कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है। (कुलुस्सियों 2:18)

झूठे शिक्षकों ने दावा किया कि उन्होंने स्वर्गदूतों से दर्शन प्राप्त किए हैं, और इस आधार पर उन्होंने अन्य मसीहियों को वैसी ही उचित रस्मों को पूरा करने के लिए उत्साहित किया ताकि उन्हें भी ऐसे ही दर्शन प्राप्त हों।

और शायद झूठे शिक्षकों ने वास्तव में दर्शनों का अनुभव किया हो, चाहे ये परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों की अपेक्षा दुष्ट आत्माओं की ओर से हों। दूसरी ओर, उन्होंने केवल आत्म-प्रेरित या किसी औषधि से प्रेरित होकर मूर्च्छित होने का अनुभव किया हो। या वे झूठ भी बोल रहे होंगे।

चाहे जो भी हो, प्राचीन जगत में स्वर्गदूतों की शक्ति और प्रभाव का अतिश्योक्तिपूर्ण दृष्टिकोण असामान्य नहीं था। कुछ यहूदी शिक्षक भी स्वर्गदूतों के विषय में ऐसे ही विचार रखते थे। और कुछ यूनानी दर्शनशास्त्रों ने उनकी वाणियों और आकाशीय शक्तियों के विषय में ऐसी ही बातें सिखाई थीं। दुर्भाग्यवश, कुलुस्से के मसीहियों की इस विचारों से परिचितता ने शायद इन झूठी शिक्षाओं को तार्किक बना दिया होगा और फलस्वरूप कुलुस्सियों की कलीसिया में इन झूठी धर्मशिक्षाओं को पकड़ बनाने की अनुमति प्रदान की।

अब जब हमने स्वर्गदूतों की आराधना के विषय पर पौलुस के प्रत्यक्ष उल्लेख को देख लिया है, तो अब हमें शासकों और अधिकारियों के विषय पर उसके द्वारा की गई चर्चा की ओर मुड़ना चाहिए। पहली सदी की भाषा में, "शक्तियां" और "अधिकार" जैसे शब्द स्वर्गदूतों के समान आकाशीय आत्मिक प्राणियों का उल्लेख करते थे।

जैसा हम देख चुके हैं, कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने स्वर्गदूतों और आकाशीय आत्मिक प्राणियों की आराधना करने के लिए उत्साहित किया था। पौलुस ने इस झूठी शिक्षा का प्रत्युत्तर स्वर्ग और पृथ्वी पर पाई जाने वाली हर शक्ति और अधिकार पर मसीह की सर्वोच्चता पर बल देने के द्वारा दिया। उसने कुलुस्सियों 1:16 में यीशु की सर्वोच्चता के विषय में लिखा :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। **(कुलुस्सियों 1:16)**

यहां पौलुस ने सिंहासनों, शक्तियों, शासकों और अधिकारों का उल्लेख किया। सिंहासन और शक्तियां यूनानी शब्दों थ्रोनोस और क्यूरिटेस के अनुवादित रूप हैं। ये दोनों शब्द सामान्यत: मानवीय राजाओं और अन्य सांसारिक शासकों को दर्शाते हैं, परन्तु वे आकाशीय आत्मिक प्राणियों का उल्लेख भी कर सकते हैं। वहीं शासक और अधिकार यूनानी शब्दों आरखे और एग्ज़ूसिया के अनूदित रूप हैं, ये सामान्यत: स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं जैसी अदृश्य शक्तियों को दर्शाते हैं।

कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के दृष्टिकोण में स्र्वगदूत और दुष्टात्मा जैसे आत्मिक अधिकारी उनके मानवीय रूपों से अधिक महान् थे। झूठे शिक्षकों ने स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं की शक्ति को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया, इतना अधिक कि उन्होंने इन अदृश्य शासकों को वे कार्य और योग्यताएं प्रदान कर दीं जो वास्तव में केवल मसीह के पास थीं।

पौलुस ने संपूर्ण सृष्टि के प्रभु के रूप में मसीह की प्रशंसा करने के द्वारा उनकी त्रुटियों को प्रकट किया। आकाशीय आत्मिक और सांसारिक अधिकारों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की अपेक्षा पौलुस ने उन्हें एक साथ दर्शाया और यह दिखाया कि आत्मिक और सांसारिक के बीच भिन्नता से अधिक समानता पाई जाती है। उन दोनों की रचना की गई है, और दोनों ही मसीह से निम्न हैं। उनमें वास्तविक अन्तर आत्मिक और सांसारिक होना नहीं, जैसा कि झूठे शिक्षक बल देते थे, परन्तु मसीह का उनके ऊपर अधिकार रखना है। फिर से उसने यह कुलुस्सियों 1:16 में कहा :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की। **(कुलुस्सियों 1:16)**

पौलुस ने फिर यह कहा कि आकाशीय आत्मिक शक्तियां और मसीह एक-दूसरे के विरोधी हैं। झूठे शिक्षकों ने सोचा कि मसीह की आराधना करने और आकाशीय आत्मिक अधिकारों की आराधना करने में समानता है। परन्तु पौलुस ने दर्शाया कि झूठे शिक्षकों ने चाहे जिस प्रकार भी आकाशीय आत्मिक प्राणियों जिनकी वे आराधना करते थे, समझा हो परन्तु सत्य यह है कि केवल दुष्टात्माएं स्वयं की आराधना करने की अनुमति देती हैं। परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों का ऐसी मूर्तिपूजा से कोई लेना-देना नहीं है। और मसीह अपने शत्रुओं की आराधना करने की अनुमति नहीं देता।

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:15 में इस बिन्दू को संबोधित किया, जहां उसने लिखा :

> और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई। **(कुलुस्सियों 2:15)**

यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर ने आकाशीय आत्मिक शक्तियों और अधिकारों को निशस्त्र कर दिया और उन पर विजय प्राप्त की। दूसरे शब्दों में आकाशीय आत्मिक शक्तियों और अधिकारों ने आत्मिक युद्ध में परमेश्वर का विरोध किया- वे विद्रोही, बुरी आत्माएं और परमेश्वर के शत्रु थे। वे दुष्टात्माएं थीं, न कि पवित्र स्वर्गदूत। परन्तु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर ने इन दुष्टात्माओं की युद्ध करने की योग्यता को उनसे छीन लिया और उन्हें पराजित कर अपमानित किया। ये पतन हुए, शक्तिरहित, पराजित दुष्टात्माएं, आकाशीय आत्मिक शक्तियां थीं जिनकी आराधना कुलुस्से के झूठे शिक्षक करते थे, वे जिन्हें पौलुस "शासक और अधिकारी" कहता है।

अब जब हमने स्वर्गदूतों, आकाशीय आत्मिक शासनों और अधिकारों के पौलुस के वर्णन की जांच कर ली है, तो अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि किस प्रकार पौलुस ने इस जगत के आधारभूत सिद्धांतों के बारे में बात की। जिस प्रकार हम कह चुके हैं, यह भी आकाशीय आत्मिक शक्तियों को दर्शाने वाला शब्द या अभिव्यक्ति थी।

पहली सदी में यूनानी शब्द स्टोखिया, जिसे "आधारभूत सिद्धांतों" के रूप में अनूदित किया जा सकता है, का उल्लेख सामान्यत: देवताओं, आकाशीय आत्मिक शक्तियों जो तारों और नक्षत्रों से जुड़ी होती हैं, को दर्शाने के लिए किया जाता था। स्टोइखिया का प्रयोग चार आधारभूत भौतिक तत्वों- पृथ्वी, हवा, आग और पानी- को दर्शाने के लिए भी किया जाता था। ये माना जाता था कि ये आधारभूत सिद्धांत या तत्व मानवजाति के भाग्यों को प्रभावित और नियंत्रित भी करते हैं।

पौलुस ने गलातियों 4:8-9 में इस प्रकार से स्टोइखिया का प्रयोग स्पष्ट रूप से किया :

> तब तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं। पर अब... उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो? (गलातियों 4:8-9)

यहां शब्द "सिद्धांतों" यूनानी शब्द स्टोइखिया का अनुवाद है, और यह उनको दर्शाता है जो स्वभाव से ईश्वर नहीं हैं। अर्थात् यह उन दुष्टात्माओं को दर्शाता है जो अन्य झूठे देवताओं का रूप धरते हैं। स्टोइखिया के इसी प्रकार के अर्थ को पौलुस कुलुस्सियों 2:8 में दर्शाता है जहां उसने इन आधारभूत सिद्धांतों की निन्दा की :

> चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

पौलुस ने इन आधारभूत सिद्धांतों यास्टोइखिया को झूठे शिक्षकों के दर्शनशास्त्र के आधार के रूप में दर्शाया। दूसरे शब्दों में वह तर्क दे रहा था कि झूठे शिक्षकों की धार्मिक परंपराओं को ठुकरा दिया जाना चाहिए क्योंकि वे झूठे देवताओं को संबोधित करती हैं।

रूचिकर रूप से इन तत्वों और आकाशीय आत्मिक शक्तियों के बारे में ऐसे ही विचार यहूदी धर्म की कुछ शाखाओं में भी पाए जाते थे, विशेषकर पुराने और नए नियम के बीच के समय के दौरान। ऐसा प्रतीत होता है कि इसने पौलुस के दिनों में झूठी शिक्षा का मंच तैयार किया जो कुलुस्से में प्रकट हुई। कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने शायद यहूदी व्यवस्थावाद, अन्यजाति के धर्मों और मसीहियत को एक साथ मिला दिया, और इन आकाशीय या ब्राह्मांडीय शक्तियों जिन्हें आधारभूत सिद्धांत या स्टोइखिया कहा जाता है, की आराधना करने को उत्साहित किया।

कुलुस्से की कलीसिया ने पहली सदी में कुछ वास्तविक चुनौतियों का सामना किया। अन्य कलीसियाओं से अलग, उन्होंने कभी प्रैरितिक प्रशिक्षण को प्राप्त नहीं किया था। यद्यपि कलीसिया की

स्थापना परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों के द्वारा की गई थी, परन्तु यह प्रेरितों के धर्मविज्ञान पर दृढ़ता से आधारित नहीं थी। इस बात ने कुलुस्सियों के मसीहियों को इन झूठी शिक्षाओं के प्रति असुरक्षित कर दिया था। अत: जब झूठे शिक्षक यहूदी धर्म के गलत प्रयोगों और गैरमसीही मूर्तिपूजा की बातों से उन्हें भरने लगे तो उनके लिए सत्य और झूठी शिक्षा के बीच अन्तर पैदा करना मुश्किल हो गया था। बुद्धि से काम लेते हुए उन्होंने अपनी समस्या को पहचाना और पौलुस से सहायता की अपील की।

संरचना और विषय-वस्तु

अब जब हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है तो हम हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं- कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की संरचना और विषय-वस्तु।

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री को चार मुख्य भागों में बांटा जा सकता है: 1:1-2 में अभिवादन; 1:3-14 में आभार-प्रदर्शन और मध्यस्थता का उत्साह; 1:15-4:6 में मसीहियत की सर्वोच्चता की चर्चा करने वाला मुख्य भाग; और 4:7-18 में अंतिम अभिनंदन।

अभिवादन

अभिवादन, 1:1-2 में, प्रेरित पौलुस को इस पत्री के आधिकारिक लेखक के रूप में पहचानता है, और यह उल्लेख भी करता है कि यह पौलुस के चेले तीमुथियुस की ओर से भी है। यह स्पष्ट है कि पौलुस मुख्य लेखक है क्योंकि केवल उसी ने पत्री पर हस्ताक्षर किए हैं। अभिवादन में एक लघु आशीष भी शामिल है जो अभिनंदन का कार्य करती है।

उत्साह

आभार-प्रदर्शन और मध्यस्थता के उत्साह, जो 1:3-14 में पाए जाते हैं, के बाद कुलुस्सियों की कलीसिया के विषय में वे विवरण आते हैं जो पौलुस इपफ्रास से प्राप्त करता है। इपफ्रास वह सेवक था जिसने कुलुस्से में कलीसिया की स्थापना की थी। आपको स्मरण होगा कि उसने कारावास के दौरान पौलुस के साथ समय व्यतीत किया था। पौलुस से भेंट करने के दौरान उसने कुलुस्सियों के विश्वासियों के विश्वास और प्रेम से प्रेरित को अवगत करवाया, और इन दोनों व्यक्तियों ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए प्रार्थना में काफी समय व्यतीत किया। अत: जब पौलुस ने उन्हें पत्री लिखी तो उसने उनको बताया कि किस प्रकार उसने उनके विश्वास और उद्धार के लिए परमेश्वर को निरन्तर धन्यवाद दिया। और उसने उन्हें अपनी निरन्तर प्रार्थना के बारे में सूचित किया कि परमेश्वर विशेष आत्मिक पहचान प्राप्त करने और भले कार्य करने की सामर्थ प्राप्त करने के द्वारा उन्हें आशीष दे।

अंतिम अभिनंदन

कुलुस्सियों के अंतिम भाग, 4:7-18 में आखिरी अभिनंदन का चरण, में पौलुस ने अनेक लोगों की ओर से कुलुस्सियों को अभिनंदन भेजे जो कारागृह में उसके साथ थे। अंतिम भाग दर्शाता है कि पौलुस ने तुखिकुस और उनेसिमुस की निगरानी में कुलुस्सियों को यह पत्र भेजा। तुखिकुस ने इफिसियों का पत्र भी

पहुंचाया, और उनेसिमुस ने फिलेमोन को पत्र पहुंचाया। यह इस बात को दर्शाता प्रतीत होता है कि सभी तीन पत्र- कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलेमोन- लगभग एक ही समय में लिखे और भेजे गए थे।

आखिरी भाग लौदिकिया की कलीसिया को लिखी गई पत्री का उल्लेख भी करता है, और कुलुस्सियों को निर्देश देता है कि वे उस पत्र को भी पढ़ें एवं लौदिकियावासियों के साथ अपने पत्र को भी बांटें। यह हमें जानकारी देता है कि चाहे पौलुस ने इन पत्रियों को विशेष लोगों को विशेष परिस्थितियों में लिखे, परन्तु वह चाहता था कि ये अलग-अलग लोगों पर भी लागू हों। जैसे कि हम आगामी अध्याय में देखेंगे, यह संभव है कि पौलुस को लिखी इफिसियों की पत्री ही वह पत्री है जिसका उल्लेख यहां लौदिकियों की पत्री के रूप में हुआ है।

मसीहियत की सर्वोच्चता

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री का मुख्य भाग 1:15 से आरंभ होता है और 4:6 तक चलता है। यह भाग झूठे शिक्षकों के धर्म पर मसीहियत की सर्वोच्चता के विवरण प्रदान करता है।

मसीहियत की सर्वोच्चता के विषय पर पौलुस की चर्चा को लगभग चार मुख्य उपभागों में बांटा जा सकता है : पहला, 1:15 से 20 में मसीह की सर्वोच्चता। दूसरा, 1:21 से 2:5 तक मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता। तीसरा, 2:6 से 23 में मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता। और चौथा, 3:1 से 4:6 में मसीही जीवन की सर्वोच्चता। हम पहले भाग के साथ आरंभ करके जो स्वयं मसीह की सर्वोच्चता पर ध्यान देता है, इन सब भागों का सारांश में सर्वेक्षण करेंगे।

मसीह की सर्वोच्चता

झूठे शिक्षक कुलुस्सियों की कलीसिया को आकाशीय आत्मिक शक्तियों की आराधना करने को फुसलाने का प्रयास कर रहे थे। और वे यह सोचते हुए सन्यासी जीवन का सुझाव दे रहे थे कि ऐसा कठिन जीवन आत्मिक शक्तियों को संतुष्ट कर देगा और वे इन झूठे देवताओं से लाभ प्राप्त करेंगे। अत: पौलुस ने यह दर्शाने के द्वारा झूठी शिक्षाओं का खण्डन करना आरंभ किया कि मसीह सभी तथाकथित देवताओं से महान् है।

एक ओर पौलुस ने बल दिया कि मसीह पूरी सृष्टि पर राजा है और कि उसमें पूरी सिद्धता और अधिकार पाया जाता है। दूसरी ओर पौलुस ने सिखाया कि संसार के आधारभूत सिद्धांत उद्धार की आशीषों को प्रदान करने में और सम्मान प्राप्त करने के अयोग्य हैं।

पौलुस ने कुलुस्सियों 1:15 से 20 में मसीह की सर्वोच्चता के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाया, और इनमें से अधिकांश विवरण कुलुस्से की झूठी शिक्षाओं के विपरीत थे। पौलुस द्वारा बताए गए विवरणों में उसने कुलुस्सियों 1:15 में मसीह को परमेश्वर के स्वरूप के रूप में, कुलुस्सियों 1:15 में सारी सृष्टि पर पहिलौठे के रूप में, कुलुस्सियों 1:16 में सृष्टि के दूत के रूप में, कुलुस्सियों 1:18 में सर्वोच्च प्रभु के रूप में, कुलुस्सियों 1:19 में परमेश्वर के देहधारी रूप में, और कुलुस्सियों 1:20 में एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाले के रूप में दर्शाया।

पौलुस ने यह कहते आरंभ किया कि मसीह अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप है। इस विवरण ने मसीह को झूठे शिक्षकों के देवताओं के बिल्कुल विपरीत खड़ा कर दिया। सुनें पौलुस ने किस प्रकार कुलुस्सियों 1:15-16 में यीशु का वर्णन किया :

> वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:15-16)

यद्यपि पवित्रशास्त्र अनेक स्थानों पर सभी मनुष्यों के परमेश्वर के स्वरूप होने का वर्णन करता है, परन्तु पौलुस के मन में यहां कुछ ऐसा था जो केवल यीशु पर ही लागू होता था, कुछ ऐसा जो सारी सृष्टि पर उसकी शक्ति एवं अधिकार से संबंधित था। उसके मन में था कि किस प्रकार कुलुस्से में झूठे शिक्षकों ने यूनानी दर्शनशास्त्र में से "परमेश्वर के स्वरूप" अभिव्यक्ति का प्रयोग किया था।

पौलुस के दिनों में कम से कम कुछ दर्शनशास्त्रों में ब्राह्मांड को ही परमेश्वर का स्वरूप समझा जाता था, इसका अर्थ था कि यह परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रकाशन है और कि इसके प्रकाशन के माध्यम से ज्ञान और बुद्धि को प्राप्त किया जा सकता था। हम इस विचार के उल्लेख को प्लूटो के तिमेयुस, जो 4 ई.पू. का है, एवं थ्राइस ग्रेट हरमिस देवता के विषय में ज्ञानवादी लेखनों, जो दूसरी और तीसरी ईस्वी के हैं, में पा सकते हैं।

अत: जहां झूठे शिक्षकों ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में नक्षत्रों और उनके तत्वों की ओर देखा वहीं पौलुस ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मसीह को दर्शाया। उसने "परमेश्वर के स्वरूप" शब्दसमूह के यूनानी दार्शनिक अर्थ को यह दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया कि मसीह, न कि झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना की जाने वाली दुष्टात्माएं, परमेश्वर का स्थायी प्रकाशन है, वह जिसकी ओर विश्वासियों को परमेश्वर की महान् बुद्धि और ज्ञान पाने के लिए देखना है।

दूसरा, पौलुस ने उल्लेख किया कि मसीह सारी सृष्टि के ऊपर पहलौठा है। फिर से पौलुस ने झूठे शिक्षकों का खण्डन करने में अपने शब्दों का चयन बहुत ही ध्यान से किया। सुनें उसने कुलुस्सियों 1:15-16 में मसीह के विषय में क्या लिखा :

> वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। **(कुलुस्सियों 1:15-16)**

यूनानी शब्द प्रोटोकोस, जिसका अनुवाद यहां "पहिलौठा" है, का प्रयोग प्राय: जन्म लेने के क्रम की अपेक्षा महानता और अधिकार को दर्शाने के लिए किया जाता है।

प्राचीन जगत में परिवार में यह आवश्यक नहीं था कि सबसे पहले जन्मा बच्चा ही पहिलौठा हो। बल्कि पहिलौठा उसे माना जाता था जिसके पास उत्तराधिकार के सबसे अधिक अधिकार हों। सामान्यत: पहिलौठा वह माना जाता था जो पिता की मृत्यु के बाद परिवार को चलाए। उदाहरण के तौर पर सबसे बड़े लड़के को "पहिलौठा" माना जाता था चाहे उससे बड़ी उसकी बहनें भी हों। और इससे बढ़कर, छोटे लड़के को पहिलौठा माना जा सकता था यदि किसी कारवणवश सबसे बड़े लड़के को उसके पद से हटा दिया गया हो।

अब हमें यह दर्शाना चाहिए कि कुछ प्रमुख धार्मिक समूहों ने इस शब्द "पहिलौठे" को यह दर्शाते हुए गलत रूप से समझा है कि संसार की सृष्टि से पहले मसीह का "जन्म" हुआ था। अर्थात् वे मानते हैं कि मसीह सदैव से एक सृजा हुआ प्राणी है, और इसीलिए वह शक्ति और अधिकार में पिता परमेश्वर के तुल्य नहीं है। परन्तु पज्ञैलुस ने मसीह के "पहिलौठे" होने के स्तर को पूरी सृष्टि के ऊपर उसके अधिकार और महानता के साथ जोड़ा, और ऐसे समय के विषय में कुछ नहीं कहा जब मसीह का अस्तित्व न हो।

जब पौलुस ने कहा कि मसीह संपूर्ण सृष्टि के ऊपर पहिलौठा है, तो उसका अर्थ था कि मसीह ही वह है जिसके पास पिता का जन्मअधिकार है, यह नहीं कि मसीह का जन्म या उसकी रचना दूसरों से पहले हुई थी। उसका अर्थ यह नहीं है कि मसीह सृष्टि का अंश है, परन्तु यह कि मसीह इसके ऊपर प्रभु है। कि झूठे शिक्षकों के पास किसी को किसी प्रकार की आशीष देने का कोई अधिकार नहीं है। मसीह, और केवल मसीह पहिलौठा है, वह जिसके पास परमेश्वर की सभी आशीषों का उत्तराधिकार है, और केवल वही इन्हें दूसरों को प्रदान कर सकता है।

तीसरा, पौलुस ने कहा कि मसीह सृष्टि का दूत है, वह जिसके माध्यम से परमेश्वर ने इस ब्राह्मांड की रचना की है। यहूदी रहस्यवाद ने प्राय: सृष्टि की रचना में स्वर्गदूतों को प्रमुख भूमिकाएं प्रदान की थीं, ऐसी भूमिकाएं जो बाइबल केवल परमेश्वर और मसीह को प्रदान करती है न कि स्वर्गदूतों को। और यूनानी दर्शनशास्त्र में तत्व-ज्ञान और अन्य आकाशीय शक्तियों को सामान्यत: ऐसी ही भूमिकाएं प्रदान की गई थीं। परन्तु पौलुस ने बल दिया कि मात्र मसीह ही सृष्टि का दूत है और ये दूसरी शक्तियां उससे निम्न और उसके अधीन में हैं। सुनें उसने कुलुस्सियों 1:16 में क्या लिखा :

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। **(कुलुस्सियों 1:16)**

जिस प्रकार हम पहले ही देख चुके हैं कि शब्द "शासक और अधिकारी" आकाशीय आत्मिक शक्तियों को दर्शाते हैं, अर्थात् वे दुष्टात्माएं जिनकी आराधना झूठे शिक्षक करते थे। और पौलुस के अनुसार ये सभी शासक और अधिकारी मसीह के अधीन हैं। सृष्टि के दूत के रूप में मसीह की प्रमुखता उसे सृष्टि की प्रत्येक वस्तु से महान् बनाती है।

चौथा, मसीह महान् प्रभु है क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसे कलीसिया के सिर के रूप में रखा है। कुलुस्सियों 1:18 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। **(कुलुस्सियों 1:18)**

पौलुस ने तर्क दिया कि मसीह को कलीसिया में और मृतकों के बीच विशेष स्तर प्रदान किया गया है "कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" पिता पुत्र को सम्मान प्रदान करना और उसे संपूर्ण सृष्टि का प्रभु बनाना चाहता था। अत: कोई तन्त्र जो मसीह की अद्वितीय सर्वोच्चता का स्थान लेने या उसके योग्य ठहरने का प्रयास करता है वह अवश्य ही झूठा या गलत है।

पांचवां, पौलुस ने स्पष्ट किया कि मसीह देहधारी परमेश्वर है। इस असाधारण कथन ने गैरमसीही यूनानी धारणाओं और यहूदी रहस्यवाद के तथाकथित शासकों और अधिकारियों के बारे में प्रत्येक दावे को बौना या निम्न कर दिया। कुलुस्सियों 1:19 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। **(कुलुस्सियों 1:19)**

परमेश्वर की सारी संपूर्णता मसीह में वास करती है जिसने मसीह को सर्वोच्च परमेश्वर का देहिक रूप बना दिया। कुलुस्से में झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना प्राप्त करने वाले शासक और अधिकारी निम्न आकाशीय आत्मिक प्राणी थे। यद्यपि यूनानी दर्शनशास्त्र में उन्हें कभी-कभी ईश्वर कहा जाता है, परन्तु सामान्यत: उन्हें महान् ईश्वरों के रूप में कभी नहीं माना गया।

इसके विपरीत परमेश्वर की सारी संपूर्णता यीशु मसीह में वास करती है। इसका अर्थ है कि मसीह उस परमेश्वर का देहधारी रूप है जिसने ब्राह्मांड की रचना की है, वह जिसकी सबको प्रभु के रूप में आज्ञा माननी आवश्यक है। यह मसीह को झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना प्राप्त करने वाले निम्न आकाशीय आत्मिक प्राणियों से कहीं अधिक महान् बनाता है।

अंत में, पौलुस ने मसीह को परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाले के रूप में प्रकट किया। पौलुस ने कुलुस्सियों 1:19-20 में मसीह के इस तथ्य या सच्चाई को स्पष्ट किया :

> क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है... उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। (कुलुस्सियों 1:19-20)

परमेश्वर की योजना है कि वह "सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कराए"। अर्थात् यीशु मसीह वह दूत है और माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर संसार से पाप को साफ कर रहा है और मनुष्यजाति के साथ मेल कर रहा है।

झूठे शिक्षकों द्वारा आराधना की जाने वाली कमजोर शक्तियां दुष्टात्माएं थी जिनका काम मसीह की महिमा और अधिकार को चुराना और इसका प्रयोग अपने आराधकों पर अत्याचार करने में करना था। उनके लक्ष्य तुच्छ थे और उनमें अपने आराधकों को अर्थपूर्ण रूप में आशीष देने की योग्यता नहीं थी। परन्तु मसीह परमेश्वर की ओर जाने वाला मार्ग था। जो सुसमाचार पौलुस प्रचार कर रहा था वह यह था कि परमेश्वर पूरी सृष्टि को पापरहित, पहले वाली और अनन्त धन्य अवस्था में पुन: स्थापित कर रहा था। और वह ऐसा केवल और केवल यीशु मसीह के द्वारा कर रहा था। केवल यीशु के द्वारा ही पापों की क्षमा मिल सकती है और परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया जा सकता है। झूठे शिक्षकों की तुच्छ और शक्तिरहित आत्माओं की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर के पास पहुंच और उसकी अनन्त आशीषें यीशु मसीह में सेंत-मेंत उपलब्ध हैं।

कम से कम इन छ: रूपों में- मसीह परमेश्वर के स्वरूप में, सारी सृष्टि के ऊपर पहिलौठा, सृष्टि का दूत, महान् प्रभु, देहधारी परमेश्वर और एकमात्र मेलमिलाप करवाने वाला- मसीह उन सब तथाकथित देवताओं से सर्वोच्च है जिनकी आराधना कुलुस्से में झूठे शिक्षक करते थे।

मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता

आकाशीय आत्मिक शक्तियों पर मसीह की सर्वोच्चता को दर्शाने के पश्चात पौलुस ने मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता का दावा किया। उसके तर्क का यह भाग कुलुस्सियों 1:21 से 2:5 में पाया जाता है।

पौलुस ने तर्क दिया कि क्योंकि मसीह झूठे देवताओं से महान् है इसलिए मसीह के सेवक भी उनसे बढ़कर हैं जो उन झूठे देवताओं की सेवा करते हैं। पौलुस के तर्क में पांच मुख्य विचार थे- मसीही सुसमाचार के द्वारा प्राप्त मेलमिलाप, जिसका उल्लेख उसने कुलुस्सियों 1:21-23 और 2:5 में किया; कुलुस्सियों 1:24 में पौलुस की अपनी निस्वार्थता; कुलुस्सियों 1:25 में पौलुस को प्राप्त दैवीय/स्वर्गीय आदेश; कुलुस्सियों 1:25-28 और 2:2-4 में सुसमाचार द्वारा प्रदान किया गया श्रेष्ठ प्रकाशन; और मसीह के सेवकों को मिलने वाली सामर्थ जिसे पौलुस ने कुलुस्सियों 1:29 से 2:1 में संबोधित किया। पौलुस ने उस मेलमिलाप की बात करने के द्वारा चर्चा आरंभ की जिसका अनुभव कुलुस्सियों ने सुसमाचार के द्वारा पहले से ही कर लिया था। जिस प्रकार हम कुलुस्सियों 1:22-23 में पढ़ते हैं :

> उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे... यही सुसमाचार तुमने सुना है... और जिसका मैं, पौलुस, सेवक बना। (कुलुस्सियों 1:22-23)

मसीह के सेवक श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे ऐसे सुसमाचार का प्रचार करते हैं जो विश्वासियों का परमेश्वर से मेलमिलाप करवाता है।

कुलुस्से में झूठे शिक्षकों ने दुष्टात्माओं को संतुष्ट करने के लिए लोगों को उत्साहित किया और शायद परमेश्वर के साथ मेलमिलाप का प्रस्ताव भी दिया। परन्तु वास्तविकता में उनका कोई मेलमिलाप नहीं हुआ क्योंकि उनके तथाकथित सुसमाचार में उद्धार प्रदान करने की कोई शक्ति नहीं थी।

इसके विपरीत, कुलुस्सियों के विश्वासियों ने उस सच्चे मेलमिलाप का अनुभव कर लिया था जो परमेश्वर के सेवकों द्वारा प्रचारित सच्चे सुसमाचार के द्वारा मिलता है। उन्हें पहले से क्षमा मिल चुकी थी और वे परमेश्वर के समक्ष मसीह की धार्मिकता को धारण किए हुए खड़े थे। इस बात ने शायद उनको पौलुस की बात में विश्वास करने और झूठे शिक्षकों को ठुकरा देने के लिए उत्साहित किया होगा।

दूसरा, पौलुस ने कलीसिया के अपने कष्टों के बारे में बात करते हुए स्वयं की निस्वार्थता को दर्शाया। जैसा कि उसने कुलुस्सियों 1:24 में लिखा :

> अब मैं... मसीह के क्लेशों की घटी... अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ। (कुलुस्सियों 1:24)

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा था, पौलुस के कष्टों ने सुसमाचार के लिए एक शक्तिशाली गवाही प्रदान करने, कलीसिया को उत्साहित करने और मसीह के कष्टों को पूरा करने के द्वारा कलीसिया को आशीष प्रदान की थी। इसके विपरीत, कुलुस्से में झूठे शिक्षकों को न तो कारावास में डाला गया और न ही उन्हें सताया गया। कलीसिया के लिए कष्ट सहने की अपनी तत्परता को दर्शाने के द्वारा पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि मसीह के सेवक झूठे शिक्षकों की तुलना में अधिक निस्वार्थी हैं।

तीसरा पौलुस ने अपने दैवीय/स्वर्गीय आदेश के बारे में बात की। कुलुस्से में आत्म-नियुक्त झूठे शिक्षकों के विपरीत प्रेरित के रूप में पौलुस की नियुक्ति स्वयं प्रभु ने की थी। पौलुस ने अपने आदेश का वर्णन कुलुस्सियों 1:25 में किया :

> मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार (कलीसिया का) सेवक बना जो तुम्हारे लिए मुझे सौंपा गया ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूं। (कुलुस्सियों 1:25)

जैसा हम यहां पर देखते हैं, स्वयं परमेश्वर ने पौलुस को एक प्रेरित के रूप में बुलाया था।

अपनी जवानी के दिनों में, पौलुस कलीसिया को सताने वाला जोशीला व्यक्ति था। परन्तु तब पुनर्जीवित प्रभु पौलुस के समक्ष प्रकट हुआ और उसका हृदयपरिवर्तन किया। उस समय यीशु ने पौलुस को अपना प्रेरित भी नियुक्त किया और यीशु के लिए बोलने का उसे अधिकार प्रदान किया। इसका अर्थ था कि पौलुस का अधिकार झूठे शिक्षकों के अधिकार से कहीं अधिक श्रेष्ठ था।

पौलुस ने कुलुस्सियों 2:8 में उनकी शिक्षाओं का वर्णन किया, जहां उसने लिखा :

> चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं। (कुलुस्सियों 2:8)

झूठे शिक्षक उन विचारों पर निर्भर रहे जिनकी खोज मूर्तिपूजक लोगों ने की थी। पौलुस के विपरीत, उनके पास परमेश्वर की ओर से बोलने का अधिकार नहीं था और उन्हें परमेश्वर द्वारा कलीसिया को सिखाने के लिए भी नहीं बुलाया गया था।

चौथा, पौलुस के द्वारा प्राप्त किया गया प्रकाशन उससे श्रेष्ठ था जिसका प्रमाण झूठे शिक्षकों ने दिया था। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 2:4 में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> यह मैं इसलिये कहता हूँ, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे। (कुलुस्सियों 2:4)

पौलुस ने झूठे शिक्षकों के शब्दों को "कपटी" कहा। और इसके विपरीत उसके अपने शब्दों ने सत्य को प्रकट किया और मसीहियों को झूठे शिक्षकों के भ्रम से बचने में सहायता की।

वास्तव में, गलातियों 1:15-18 के अनुसार पौलुस ने परमेश्वर की ओर से प्रकाशनों को प्राप्त करते हुए अरब के रेगिस्तान और दमिश्क में तीन वर्ष बिताए। फिर भी, झूठे शिक्षक उन परंपराओं पर निर्भर रहे जो मनुष्यों द्वारा उनको सौंपी गई थीं। इस बात ने पौलुस के प्रकाशनों को झूठे शिक्षकों के प्रकाशनों से अति श्रेष्ठ बना दिया।

अब यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पौलुस के प्रकाशन परमेश्वर की ओर से थे, और कि वे कुलुस्से में झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं के समान मानवीय खोज नहीं थे। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि पौलुस के प्रकाशनों की विषय-वस्तु भी कुलुस्से की झूठी शिक्षाओं से श्रेष्ठ थी। कुलुस्सियों की कलीसिया को लिखी उसकी पत्री में पौलुस ने अपने प्रकाशनों को वे "रहस्य" जो परमेश्वर ने उस पर प्रकट किए थे, एवं "बुद्धि और ज्ञान के भण्डार" कहा। और पौलुस ने इस भण्डार को अपने पास नहीं रखा- यह वहीं सुसमाचार था जिसका प्रचार उसने किया था। ये मसीह के बलिदान के आधार पर विश्वास के माध्यम से प्राप्त किए गए परमेश्वर के साथ मेलमिलाप और उसके राज्य में भागीदारी के सत्य थे। यह घोषणा झूठे शिक्षकों के हर प्रस्ताव से कहीं अधिक बेहतर थी।

पांचवा, पौलुस ने मसीह के सेवकों को मिलने वाली श्रेष्ठ सामर्थ के बारे में लिखा और इस सत्य को दर्शाया कि परमेश्वर अपने सेवकों को सामर्थ प्रदान करता है। पौलुस ने अपनी शक्ति से परिश्रम नहीं किया था। बल्कि परमेश्वर ने अपने प्रेरित के रूप में पौलुस को कार्य करने और कष्ट सहने के लिए सामर्थ दी थी और उसे प्रेरित किया था। पवित्र आत्मा ने पौलुस को विस्मित कर देने वाले वरदान प्रदान किए थे जिसके द्वारा उसे बोलने के लिए शब्द एवं बोलने के अवसर प्रदान किए, और अपनी गवाही की पुष्टि के लिए चमत्कार प्रदान किए ताकि पौलुस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बढ़ा सके। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 1:29 में लिखा :

> मैं उस की उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ। (कुलुस्सियों 1:29)

पौलुस का अधिकार, उसके शब्द एवं उसकी सामर्थ स्वयं परमेश्वर की ओर से थे। और कुलुस्से के झूठे शिक्षक इससे तुलना नहीं कर पाए। उनकी सेवकाई और उनका संदेश शक्तिरहित एवं निरर्थक थे।

सारांश में, हम देखते हैं कि पौलुस ने मसीही सुसमाचार के द्वारा प्राप्त मेलमिलाप, उनकी निस्वार्थता, उनके स्वर्गीय आदेश, उनके द्वारा प्राप्त प्रकाशन, और पवित्र आत्मा द्वारा पाई जाने वाली सामर्थ के बारे में लिखकर मसीह के सेवकों की श्रेष्ठता पर बल दिया।

मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता

मसीह और फिर मसीह के सेवकों की सर्वोच्चता पर बल देने के पश्चात् पौलुस ने 2:6-23 में मसीह में पाए जाने वाले उद्धार की सर्वोच्चता पर बल दिया।

मसीह में उद्धार की सर्वोच्चता पर पौलुस की चर्चा दो मुख्य भागों में बांटी जाती है- कुलुस्सियों 2:6-15 में मसीह के साथ संयोजित जीवन के लिए पौलुस की प्रशंसा, और कुलुस्सियों 2:16-23 में तत्व-ज्ञान के अधीन रहने वाले जीवन की निन्दा।

पहले खण्ड में पौलुस मसीह के साथ संयोजित होने पर मिलने वाले उद्धार के अनेक लाभों का वर्णन किया, उसने कुलुस्सियों 2:6-10 में मसीह के प्रभुत्व के भले और शक्तिदायक पहलुओं के साथ आरंभ किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन पदों में पौलुस ने दर्शाया कि क्योंकि मसीह हमारा प्रभु है इसलिए हम उसमें रोपे गए हैं, उस पर आधारित हैं और उसमें सामर्थ को प्राप्त करते हैं, एवं फलस्वरूप उसके प्रति असीम आभार महसूस करते है। जिन्होंने झूठे शिक्षकों का अनुसरण किया वे उन निम्न आत्मिक शक्तियों के बंदी बन गए जिनकी वे आराधना करते थे, परन्तु जो मसीह के प्रभुत्व के अधीन हैं उन्हें उसके साथ राज्य करने का अधिकार दिया गया है। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 2:9-10 में लिखा :

> क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। (कुलुस्सियों 2:9-10)

मसीह का हर शक्ति के ऊपर दैवीय अधिकार है। और क्योंकि विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए वे दैवीय अधिकार को आपस में बांटते हैं।

दूसरा, पौलुस ने उस आत्मिक सामर्थ का उल्लेख भी किया जो विश्वासियों में पाई जाती है क्योंकि हम मसीह के साथ जुड़े हुए हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:11-13 में इस आशीष को स्पष्ट किया। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 2:12 में उसने लिखा :

> (तुम) उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। (कुलुस्सियों 2:11-13)

क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं तो विश्वासी न केवल मसीह की मृत्यु में सहभागी होते हैं जो हमें क्षमा प्रदान करती है बल्कि मसीह के पुनरुत्थान और जीवन में भी जिससे हमारी आत्माओं को पुन: जीवन मिलता है।

तीसरा, क्योंकि विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए हम पाप से क्षमा प्राप्त करते हैं और व्यवस्था के कामों के द्वारा उद्धार अर्जित करने से हम मुक्त हो गए हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:13-15 में इन विचारों को व्यक्त किया। जिस प्रकार उसने कुलुस्सियों 2:13-14 में लिखा :

> हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, और विधियों का वह लेख... मिटा डाला और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। (कुलुस्सियों 2:14-15)

परमेश्वर की व्यवस्था पाप में गिरी मनुष्य जाति को पाप की सजा सुनाती है। परन्तु क्योंकि हम मसीह में उसकी मृत्यु से जुड़े हुए हैं, हम उस मृत्यु का अनुभव कर चुके हैं जिसकी मांग व्यवस्था करती है। हम हमारी सजा पूरी कर चुके हैं जिससे अब हम सब सजाओं से मुक्त हैं।

मसीह में आशीषों की इस पृष्ठभूमि में पौलुस ने कुलुस्से के झूठे शिक्षकों के संदेश की निन्दा की। मसीह के साथ संयोजित जीवन की पहचान मसीह के प्रभुत्व की आशीषों के साथ की जाती है। परन्तु तत्व-ज्ञान के अधीन में पाया जाने वाला जीवन उसे रचित प्राणियों मात्र के निरंकुश प्रभुत्व में रख देता है। जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 2:16-18 में लिखा, इसका परिणाम न केवल दण्ड में आता है, बल्कि इससे वे आशीषे खोई जा सकती हैं जो मसीह प्रदान करता है।

इससे बढ़कर, जहां मसीह के साथ संयोजन आत्मिक सामर्थ प्रदान करता है वहीं तत्व-ज्ञान के अधीन होने का परिणाम मसीह से अलग हो जाना होता है, और इस प्रकार आत्मिक दुर्बलता में भी। जैसे कि पौलुस ने कुलुस्सियों 2:19 में दर्शाया है :

> और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है। (कुलुस्सियों 2:19)

अंत में, जहां मसीह के साथ संयोजन क्षमा प्रदान करता है और व्यवस्था के दण्ड से मुक्त करता है, वहीं तत्व-ज्ञान के अधीन रहना केवल सन्यासवाद की ओर ही प्रेरित करता है। पौलुस ने कुलुस्सियों 2:23 में ऐसे सन्यासवाद की निरर्थकता पर टिप्पणी की :

> इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (कुलुस्सियों 2:23)

कुलुस्से में झूठे शिक्षकों के झूठे देवताओं के अधीन रहने के फलस्वरूप बिताए गए कठिन जीवन का पाप के विरुद्ध कोई उपयोग नहीं था। यद्यपि ऐसे कठिन जीवन का परिणाम आशीषों की ओर प्रेरित करना था, परन्तु दुष्टात्माओं के पास किसी को भी आशीष देने की शक्ति नहीं थी। इसके विपरीत, मसीह के साथ संयोजन ने अधीनता की अपेक्षा स्वतंत्रता प्रदान की और विश्वासी के ऊपर से पाप की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

मसीह के साथ संयोजन में रहने वाले जीवन और तत्व-ज्ञान के अधीन में रहने वाले जीवन के इन विपरीत पहलुओं के द्वारा पौलुस ने दर्शाया कि सच्चे मसीही सुसमाचार में प्रदान किया जाने वाला उद्धार कुलुस्से के झूठे शिक्षकों द्वारा प्रस्तावित तथाकथित आशीषों से कहीं अधिक बेहतर था।

मसीही जीवन की सर्वोच्चता

अंत में, मसीह और उसके सेवकों की सर्वोच्चता और मसीह के सुसमाचार में प्रस्तावित उद्धार को संबोधित करने के बाद, पौलुस कुलुस्सियों 3:1-4:6 में मसीही जीवन की सर्वोच्चता की ओर मुड़ा। इस भाग में पौलुस ने दर्शाया कि मसीही जीवनशैली झूठे शिक्षकों द्वारा सुझाई गई जीवनशैली से नैतिक रूप से बहुत अधिक बेहतर है।

कुलुस्से के झूठे शिक्षक नैतिक जीवन के प्रति काफी चिंतित प्रतीत हुए। आखिरकार, उनके कठिन जीवन का लक्ष्य शारीरिक आनन्द की उपेक्षा करना था। और कुछ रूपों में ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार के पापों के विषय में उनके नैतिक स्तर या लक्ष्य मसीही कलीसिया के स्तरों या लक्ष्यों के अनुरूप थे। परन्तु उनके दृष्टिकोण में एक समस्या थी। सरल रूप में कहें तो सन्यासवाद कार्य नहीं करता। बात का निचोड़ यह है कि पापी मनुष्यजाति में पाप का विरोध करने की शक्ति का अभाव है। अत: पाप से दूर रहने का हम जितना भी प्रयत्न करें, हम सदैव हार का ही सामना करते हैं। इसका अर्थ है कि नैतिकतापूर्ण जीवन जीने के लिए, परमेश्वर द्वारा हमारे लिए निर्धारित नैतिक स्तरों की आज्ञा मानने के लिए हमें किसी हमसे बड़े और हमसे अधिक शक्तिशाली पर निर्भर रहना होगा।

कुछ रूपों में मसीही जीवन पर पौलुस की शिक्षाएं झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं के समान प्रतीत हुई। वास्तव में, पौलुस ने यहां तक भी कहा कि स्वर्गीय और आत्मिक बातों पर ध्यान देना सही है न कि पृथ्वी की या सांसारिक बातों पर। कुलुस्सियों 3:2 में उसके शब्दों को सुनें :

> पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। (कुलुस्सियों 3:2)

पौलुस के अनुसार हमें पृथ्वी की बातों से अधिक आत्मिक और स्वर्गीय बातों को अधिक महत्व देना चाहिए। इसी दृष्टिकोण का प्रयोग सन्यासवादी शिक्षकों द्वारा भी किया गया था, चाहे सतही तौर पर

ही। सन्यासवादी शिक्षकों के समान पौलुस ने शारीरिक आनन्द के विरुद्ध भी शिक्षा दी। उदाहरण के तौर पर कुलुस्सियों 3:5 में उसने लिखा :

> इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है। (कुलुस्सियों 3:5)

पौलुस इस बात में झूठे शिक्षकों से सहमत था कि शरीर के कार्यों में लिप्त रहना बुरा है। परन्तु वह इस बात से उनसे असहमत था कि ऐसे पाप से किस प्रकार बचा जाए।

पौलुस और झूठे शिक्षक कई अन्य बातों में भी एक-दूसरे के विरुद्ध थे। उदाहरण के तौर पर झूठे शिक्षकों ने बाहरी रूप से माना कि उन्हें स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाना चाहिए, परन्तु उनकी जिन शिक्षाओं की पौलुस ने आलोचना की वे सभी सांसारिक थीं। हालांकि उनके पास आत्मिकता का लक्ष्य हो, परन्तु उन्होंने निरन्तर सांसारिक बातों पर ध्यान लगाकर उस लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास किया। कुलुस्सियों 2:21 में पौलुस ने उनकी शिक्षाओं का सार इस प्रकार से दिया :

> यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना। (कुलुस्सियों 2:21)

यद्यपि सन्यासवादियों ने आत्मिक क्षेत्र की ओर संकेत करने का दावा किया, परन्तु उनकी शिक्षाओं का केन्द्र सांसारिक, और शारीरिक विषय ही थे।

सन्यासवादी अपनी सन्यासी क्रियाओं में इतना लवलीन रहे कि उन्होंने उन आदर्शों पर बल देने की परवाह नहीं की जो वास्तव में स्वर्गीय और आत्मिक थे। यद्यपि उनके लक्ष्य आत्मिक रहे हों, परन्तु उनके सभी प्रयास पृथ्वी की बातों पर ही लगाए गए।

दूसरी ओर पौलुस ने उन विशेष मार्गों को सिखाया जिन पर विश्वासी केन्द्रित रह सकते हैं और उन कार्यों को करने का प्रयास कर सकते हैं जिनका आधार आत्मिक हो। उसने बल दिया कि वे अपने सांसारिक पापों पर विराम लगाएं, परन्तु वह यह भी जानता था कि एक पतित, मानवीय दृष्टिकोण से ऐसा होना असंभव था। कुलुस्सियों 3:9-11 में उसके शब्दों को सुनें :

> तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है... मसीह सब कुछ और सब में है। (कुलुस्सियों 3:9-11)

पौलुस ने स्पष्ट किया कि नैतिक जीवन की कुंजी यह है- विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं- मसीह सब में है। और मसीह के साथ इस संयोजन के कारण, हमारे पास “नए मनुष्यत्व” या “नए स्वभाव” हैं। और हम परमेश्वर द्वारा आंतरिक रूप ये नए होते जाते हैं। यह संयोजन और नवीनीकरण नैतिक रूप से जीने में हमारी सहायता करता है।

झूठे शिक्षक सच्चे विश्वासी नहीं थे। उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया था, और इसलिए वे मसीह से जुड़े हुए नहीं थे। उनके पास नए स्वभाव भी नहीं थे और परमेश्वर के द्वारा उनका नवीनीकरण भी नहीं हो रहा था। फलस्वरूप, पाप से बचने के उनके सभी प्रयास असफल हो गए थे।

परन्तु विश्वासी मसीह से जुड़े होते हैं, और इसलिए परमेश्वर के नैतिक स्तरों का पालन करने के लिए हमें सामर्थ मिलती है। परन्तु पौलुस इसी विचार पर नहीं रूका रहा। बल्कि उसने कुछ व्यावहारिक मार्गों का प्रस्ताव दिया जिनके द्वारा विश्वासी पाप पर विजय प्राप्त करने के लिए अपनी स्वयं की शक्ति पर आश्रित रहने की अपेक्षा परमेश्वर की सामर्थ पर आश्रित रह सकते हैं। कुलुस्सियों 3:12 में उसके निर्देशों को सुनें :

> इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। (कुलुस्सियों 3:12)

विश्वासी उन पापों पर ध्यान लगाने की अपेक्षा, जिनसे बचने का हम प्रयास कर रहे हैं, करूणा और दया जैसे स्वर्गीय, आत्मिक सद्‌गुणों पर बल देने के द्वारा नैतिक जीवन जीने में सफल हो सकते हैं। और हम झूठे देवताओं की मूर्खतापूर्ण मांगों को पूरा करने के प्रयासों पर ध्यान लगाने की अपेक्षा हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और हमारे चुनाव पर ध्यान लगाकर नैतिक रूप से जीवन जीने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

नैतिक जीवन जीने के लिए पौलुस की योजना दो महत्वपूर्ण रूपों में झूठे शिक्षकों की योजना से श्रेष्ठ थी। पहला, यह प्रभावशाली थी क्योंकि यह मनुष्यों की शक्ति पर निर्भर होने की अपेक्षा परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर थी। दूसरा, यह प्रभावशाली थी क्योंकि इसने पाप और सांसारिक विषयों से ध्यान को हटाकर सकारात्मक सद्‌गुणों और आत्मिक बातों पर लगाया। और महत्वपूर्ण बात यह थी कि पौलुस की योजना काम कर गई थी। सन्यासी क्रियाओं के विपरीत जो पाप के विरुद्ध कोई महत्व नहीं रखती, पौलुस की विधी ने वास्तव में नैतिक जीवन को संभव बना दिया था।

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की रचना झूठे शिक्षकों द्वारा फैलाई गई मूर्तिपूजक शिक्षाओं को संबोधित करने के लिए की गई थी। झूठे शिक्षकों ने आत्मिक शक्तियों से संबंध बनाने के गैरमसीही तरीकों और धार्मिकता को प्राप्त करने के अप्रभावी मार्गों का सुझाव दिया था। इन समस्याओं के प्रत्युत्तर में पौलुस ने मसीह का प्रचार किया। उसने प्रभु और राजा के रूप में मसीह की सर्वोच्चता, और मसीह के सेवकों की श्रेष्ठता का प्रचार किया। उसने मसीह में उद्धार के अतुल्य महत्व, और मसीही जीवन के माध्यम से पाप पर विजय पाने का प्रचार किया। हर बिन्दू पर उसने स्पष्ट किया कि जिन बातों का दावा झूठे शिक्षकों ने किया था उनको पूरा केवल मसीह ही कर सकता है।

आधुनिक प्रयोग

अब जब हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि और इसकी संरचना एवं विषय-वस्तु की जांच कर ली है तो हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए- पौलुस द्वारा कुलुस्सियों को लिखी पत्री का आधुनिक प्रयोग। किस प्रकार हम आधुनिक मसीही इन प्राचीन शिक्षाओं को हमारे जीवन में लागू कर सकते हैं?

यद्यपि कई ऐसे तरीके हो सकते हैं जिनमें हम हमारे आधुनिक जीवनों में पौलुस की शिक्षाओं को सही रीति से लागू कर सकते हैं, परन्तु हम उन दो प्रकार के प्रयोगों पर ध्यान देंगे जो पौलुस और उसके मूल श्रोताओं से निकटतम रूप से संबंधित थे- केवल मसीह के साथ वफादार बने रहने की आवश्यकता; और दिन-प्रतिदिन के आधार पर आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने का महत्व। आइए केवल मसीह के साथ वफादार बने रहने की आवश्यकता पर ध्यान देने के साथ शुरु करें।

मसीह के प्रति वफादारी

कुलुस्सियों की कलीसिया में विश्वासियों को मसीह की आराधना के साथ अन्य आकाशीय आत्मिक शक्तियों की आराधना को जोड़ने के लिए उत्साहित किया जा रहा था। यद्यपि इन अन्य

आकाशीय शक्तियों को दुष्टात्माओं के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया था, परन्तु हम देख चुके हैं कि जो भी शक्ति उनके पास थी और जो भी लाभ उनके आराधकों को प्राप्त हुए वे दुष्टात्मा से संबंधित थे। परन्तु चाहे ये शक्तियां दुष्टात्माएं या तत्व-ज्ञान या स्वर्गदूत हों, कुलुस्सियों की कलीसिया को उनकी आराधना नहीं करनी चाहिए थी। दुर्भाग्यवश, पहली सदी के सामाजिक संदर्भ ने इस विषय के सत्य को देखना कुलुस्सियों के लिए कठिन कर दिया था।

पिछली सदी के दौरान रोमी साम्राज्य में प्रबल धार्मिक विचार बहुईश्वरवादी थे। अर्थात् अधिकांश लोग मानते थे कि अनेक देवताओं और आत्मिक शक्तियों का अस्तित्व है। और इस साम्राज्य में अधिकांश समाज न केवल अनेक देवताओं के अस्तित्व को मानते थे बल्कि अनेक देवताओं की आराधना भी करते थे। उस समय के रोमी साम्राज्य के अधिकांश लोगों के लिए राजकीय धर्म के प्रमुख देवताओं जैसे जेयूस और अन्य स्थानीय एवं घरेलू देवताओं की आराधना करना सामान्य बात थी। अत: यद्यपि मसीह की मांग थी कि विश्वासी केवल उसी की आराधना करें, परन्तु वहां अत्याधिक सामाजिक दबाव था जो आरंभिक मसीहियों को अन्य देवताओं की आराधना करने के लिए भी विवश कर रहा था।

वास्तव में, जब पहली सदी में रोमी साम्राज्य ने मसीहियों को सताना शुरु किया, यह मुख्यत: इसीलिए हुआ कि मसीहियों ने राजकीय धर्म के देवताओं को मानने और उनकी आराधना करने से इनकार कर दिया था। तब यह तर्क दिया गया था कि मसीहियों ने उन देवताओं की आराधना न करके उन्हें क्रोधित कर दिया है, और कि वे देवता पूरे रोमी समाज को दण्ड देंगे यदि मसीहियों से इसका लेखा नहीं लिया गया। रोमियों ने यह मांग नहीं की थी कि मसीही मसीह की आराधना करना बंद कर दें, परन्तु यही कि वे रोमी देवताओं की आराधना भी करें।

पहली सदी के रोमी दृष्टिकोण में कोई भी बिना किसी विरोधाभास की भावना के अनेक देवताओं की आराधना कर सकता था। परन्तु मसीह केवल अपनी ही आराधना को चाहता है। यदि हम मसीह की आराधना करते हैं तो हम किसी और की आराधना नहीं कर सकते। इसीलिए पौलुस ने बल दिया कि कुलुस्से के विश्वासी अपने विश्वास में स्थिर रहें। जैसा कि उसने कुलुस्सियों 1:21-23 में लिखा :

> (परमेश्वर) ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया... ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्रा और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो। **(कुलुस्सियों 1:21-23)**

यदि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहते तो हम इस बात को साबित कर देते हैं कि परमेश्वर से हमारा सच्चा मेलमिलाप नहीं हुआ है। और यदि परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप नहीं हुआ है तो फिर उस आशा में हमारी कोई भागीदारी नहीं है जो सुसमाचार में पाई जाती है। सरल भाषा में कहें तो, यदि हम मसीह के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहते तो हम उद्धार प्राप्त नहीं करते। मसीह के प्रति वफादारी सबसे महत्वपूर्ण है।

दुर्भाग्यवश, हमारा आधुनिक संसार हमारे समक्ष आराधना के लिए अलग-अलग देवताओं को प्रस्तुत करने के द्वारा मसीह के प्रति हमारी वफादारी को निरन्तर चुनौती देता है। बहुईश्वरवाद अनेक पूर्वी धर्मों में पाया जाता है, जैसे ताओ धर्म, चीन के तीन शास्त्रीय धर्मों में से एक; हिन्दू धर्म, भारत का प्रमुख धर्म; और शिन्तो, जापान का प्रमुख धर्म। और पश्चिमी जगत में नवीन युग की विचारधाराओं ने पूर्वी धर्मों के अनेक पहलुओं को अपना लिया था। इससे बढ़कर, मोरमोनवाद सिखाता है कि मोरमोन भविष्य में बनने वाले देवता हैं। फिर अफ्रीका और एशिया के लोक एवं आदिवासी धर्मों से लेकर हाँलीवुड, कैलीफोर्निया के विज्ञानवाद तक अनेक छोटे-छोटे बहुईश्वरीय धर्म भी हैं। यह सूची बढ़ती जा सकती है।

परन्तु आधुनिक मसीही अतिरिक्त समस्याओं का सामना करते हैं। उदाहरण के तौर पर आज के कुछ प्रशासन और समाज मसीहियों को सताते हैं यदि वे केवल मसीह के प्रति वफादार रहते हैं। इसीलिए

चीन में अनेक कलीसियाएं भूमिगत ही हैं। और इस्लामी देशों में मसीहियों के विरुद्ध सताव का परिणाम प्राय: दासत्व और मृत्यु में होता है। परन्तु ये सताव जितने भी भयानक हों, और वे हमारे प्रभु को ठुकराने का हम पर कितना भी दबाव डालें, हमें मृत्यु तक मसीह के प्रति वफादार रहना आवश्यक है यदि हम परमेश्वर के साथ मेलमिलाप करना चाहते हैं।

अन्य आधुनिक समाजों में मसीहियों पर नास्तिकवाद के द्वारा भी दबाव डाला जाता है ताकि वे परमेश्वर और मसीह में अपने संपूर्ण विश्वास को त्याग दें। मसीहियत का प्राय: उन आदिकालीन और सभ्यतारहित धारणाओं के समूह के रूप में मानकर उपहास किया जाता है जो विज्ञान के परीक्षण के समक्ष खड़ी नहीं रह सकतीं। अनेक विश्वासी जिन्होंने धर्मविज्ञान और विज्ञान का अध्ययन पर्याप्त रूप से नहीं किया हो वे इन चुनौतियों का उत्तर नहीं दे सकते और उनका विश्वास हिल जाता है।

दूसरे विषयों में, आधुनिक समाज का दार्शनिक सापेक्षवाद धार्मिक उदारता पर काफी बल देता है। परिणामस्वरूप, सत्य और उद्धार के विशिष्ट दावों की निन्दा की जाती है। पौलुस ने सिखाया कि मसीह के प्रति वफादारी ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है। परन्तु जब आधुनिक मसीही इस विचार को दर्शाते हैं, तो हम पर प्राय: घमण्डी और असहनशील होने का आरोप लगाया जाता है। और फिर समाज द्वारा हम पर दबाव बनाया जाता है कि हम अनन्त आशीषों को पाने के अन्य मार्गों को भी मानें।

परन्तु सभी दबाव कलीसिया के बाहर से ही नहीं आते। उदाहरण के तौर पर, कुछ उदारवादी प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में बुद्धि या सोफिया की स्तुति भी की जाती है जिसे देवी के रूप में मानवीकृत किया जाता है। अन्य उदारवादी प्रोटेस्टेंट कलीसियाएं उनके समुदायों के दार्शनिक सापेक्षवाद का समर्थन करती हैं और सिखाती हैं कि अनेक या सभी धर्म उद्धार पाने के वैध मार्ग हैं- चाहे वे मसीह का इनकार कर दें तो भी।

सच्चाई यह है कि चाहे हम जहां भी रहें, यह संभव है कि हम मसीह के प्रति निष्ठाहीन होने का दबाव महसूस करते हैं। ये दबाव चाहे दूसरे धर्मों की वैधता को स्वीकार करने का हो या बाइबल के परमेश्वर का इनकार करने का दबाव हो। ये दबाव प्रशासन, हमारे विद्यालयों, हमारे पड़ोसियों और मित्रों, हमारे परिवारों या फिर हमारी कलीसियाओं के अगुवों से भी आ सकता है।

परन्तु यदि हमें पौलुस की शिक्षाओं के प्रति सच्चे बने रहना है तो हमें इन झूठे विचारों से अलग रहकर केवल मसीह को स्वीकार करना है। केवल मसीह ही आराधना के योग्य है, और केवल वही सच्चा उद्धार और आत्मिक आशीषें प्रदान करता है। हमें केवल मसीह के साथ अपनी वफादारी में स्थिर बने रहना आवश्यक है।

आत्मिक केन्द्र

अब जब हमने केवल मसीह के साथ वफादार रहने के महत्व को देख लिया है, तो हमें आधुनिक प्रयोग के हमारे दूसरे प्रकार की ओर मुड़ना चाहिए- हमारे जीवन में प्रतिदिन आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने का महत्व। यद्यपि पृथ्वी के विषयों पर ध्यान देने का कुछ महत्व है, परन्तु जब हम आत्मिक दृष्टिकोण से हमारे जीवन को चलाते हैं तो हमें काफी लाभ होता है।

जब हम मसीह में विश्वास करते हैं तो एक चमत्कारी कार्य होता है- हमारी आत्माएं हमारे भीतर नई हो जाती हैं। विश्वास में आने से पहले हम हमारे भीतर मरे हुए थे, और परमेश्वर के प्रति सकारात्मक प्रत्युत्तर देने में अयोग्य थे। हम परमेश्वर के शत्रु केवल इसलिए नहीं हैं कि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है और उसके दण्ड के योग्य हैं, बल्कि इसलिए भी कि हम उससे घृणा करते हैं और उसके प्रति समर्पित नहीं होते।

परन्तु परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमें अपने शत्रु बने रहने नहीं देता। इसलिए वह हमारी आत्माओं को नया करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजता है ताकि हम भीतर से पुनरुथापित हो

जाएं, और हमारे पापों से पश्चाताप करके हमारे प्रभु के प्रति समर्पित हो जाएं। इसके साथ-साथ परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर वास करता है, हमें मसीह के साथ जोड़ता है और मसीह के साथ हमारी भावी आशीषों का आश्वासन देता है।

हमारा उद्धार हमारे सांसारिक प्रयासों पर निर्भर नहीं करता, परन्तु हमारी पुनरुथापित आत्माओं और मसीह के साथ हमारे संयोजन की आत्मिक वास्तविकताओं पर निर्भर करता है। और यही कारण था कि पौलुस ने कुलुस्सियों को पृथ्वी के विषयों पर कम और आत्मिक विषयों पर अधिक बल देने के लिए उत्साहित किया।

जो मसीह पर विश्वास नहीं करते धर्मविज्ञानी उनका वर्णन नया जन्म न पाए हुओं के रूप में करते हैं। इसके विपरीत, नया जन्म पाना उन लोगों के लिए लागू किया जाता है जो मसीह पर विश्वास करते हैं। ये शब्द प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा की अवस्था को दर्शाते हैं। नया जन्म न पाने का अर्थ है आत्मिक रूप से मृत, और नया जन्म पाने का अर्थ है आत्मिक रूप से जीवित होना।

जिनको नया जन्म प्राप्त नहीं होता वे पाप के कारण परमेश्वर के दण्ड के अधीन होते हैं। और उनके पास कोई नैतिक योग्यता नहीं होती, अर्थात् वे लोग उन कार्यों को नहीं कर सकते जिन्हें परमेश्वर नैतिक रूप से शुद्ध मानता है। इससे बढ़कर, उनमें कोई नैतिक अभिलाषा नहीं होती, अर्थात, वे उन कार्यों को करना ही नहीं चाहते जिन्हें परमेश्वर नैतिक रूप से शुद्ध मानता है। सारांश में, नया जन्म न पाए हुए लोग उद्धार पाए हुए नहीं होते, वे अपने आप को उद्धार नहीं दिलवा सकते और परमेश्वर के द्वारा उद्धार पाना भी नहीं चाहते।

दूसरी ओर जो नया जन्म पाए हुए हैं वे क्षमा प्राप्त करते हैं क्योंकि वे मसीह के साथ जुड़े हुए हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार उनके पापों के लिए मरा। इससे बढ़कर, उनकी नई आत्माओं में नैतिक योग्यता पाई जाती है जिससे वे परमेश्वर की आज्ञा मानने और नैतिक अभिलाषाएं रखने के योग्य हो जाते हैं और उनमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा भी पैदा हो जाती है।

जब हम मसीह पर विश्वास करते हैं तो हमारे भीतर उत्पन्न हुए आत्मिक बदलाव के महत्व को बढ़ाचढ़ा कर नहीं बताया जा सकता। नया जन्म हमें नए लोग बना देता है। हम केवल क्षमा ही प्राप्त नहीं करते हैं; हम आत्मिक रूप से भी बदल जाते हैं। नया जन्म वह आत्मिक बदलाव है जिसका वर्णन पौलुस ने कुलुस्सियों 2:13 में किया, जहां उसने लिखा :

> और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसे साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया। (कुलुस्सियों 2:13)

पहले हम हमारे पापों में मृत थे, अर्थात् हम परमेश्वर के दण्ड के भागी थे। परन्तु तब परमेश्वर ने हमें जीवित किया और हमारे पापों को क्षमा किया। हम हमारे पापी स्वभाव में भी मरे हुए थे, अर्थात् हमारे स्वभाव बुरे थे और न ही कोई नैतिक योग्यता या चाहत थी। परन्तु फिर परमेश्वर ने हमें जीवित किया। फलस्वरूप, अब हम में भलाई की चाहत रखने और भलाई करने की योग्यता है।

हमारी पुरानी, नया जन्म न पाई हुई आत्माओं में कोई नैतिक योग्यता या चाहत नहीं थी। परन्तु हमारी नई आत्माओं में नैतिक योग्यता और चाहत दोनों हैं। नया जन्म पाने और राजा मसीह से जुड़ने से पूर्व जब हम आत्मिक रूप से मृत थे, तो आत्मिक बातों या "स्वर्गीय बातों" पर चाहकर भी ध्यान लगाना हमारे लिए व्यर्थ होता। परन्तु अब जब हमने नया जन्म प्राप्त कर लिया है, तो हमारे लिए सबसे उचित बात यह है कि हम एक नई दिशा में हमारे जीवनों को केन्द्रित करें। हमारी आत्माओं को नया कर दिया गया है, अब हम आत्मिक लोग हैं। और आत्मिक लोगों के रूप में हमारे लिए सबसे तार्किक बात, और सबसे

स्वाभाविक बात, और सबसे लाभदायक बात यह है कि हम आत्मिक जीवनों पर केन्द्रित रहें। और पौलुस ने कुलुस्सियों 3:1-2 में इस संदेश को देना जारी रखा :

> सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। (कुलुस्सियों 3:1-2)

क्योंकि हम मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाए गए हैं, तो हमें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जो बातें स्वर्ग से संबंधित हैं। अब हम ब्राह्मांड की संरचना के सच्चे अधिकार से अवगत हैं; हम जानते हैं कि संसार किस प्रकार चलता है और कौनसी बातें सच्ची आशीषें प्रदान करती हैं। और इस ज्ञान के द्वारा हमारे जीवन जीने का तरीका बदल जाना चाहिए।

अब इतिहास के कुछ बिंदुओं पर मसीहियों ने त्रुटिपूर्वक सोचा है कि जब पौलुस ने पृथ्वी की बातों पर नहीं परन्तु स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाने के लिए कहा तो उसका अर्थ था कि हमें बिना किसी भटकाव के स्वर्गीय बातों पर ध्यान लगाने के लिए सामान्य मानवीय जीवन को त्याग देना चाहिए। मध्ययुगीन सन्यासी (मोंक) इस प्रकार की विचारधारा का सही उदाहरण हैं। कुछ ने समाज से विमुख होकर साधुओं के रूप में जीवन व्यतीत किया। कुछ लम्बे समय के लिए गुफाओं या खम्भों के ऊपर बैठे। दूसरों ने स्वयं को शारीरिक हानि पहुंचाई। उन्होंने सच्चे मन से माना कि आत्मिक रूप से बढ़ने का सर्वोत्तम तरीका सामान्य, अनात्मिक संसार के प्रभाव से बचना है। परन्तु वे गलत थे। वास्तव में, कुछ रूपों में, उन्होंने वही गलतियां कीं जो कुलुस्से के झूठे शिक्षकों ने की थीं।

जानेमाने शिक्षक बूकर टी. वाशिंगटन, उस विद्यालय के संस्थापक जो टुस्केगी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है, को इस अमेरिकी कहावत का लेखक माना जाता है :

> कोई व्यक्ति तब तक किसी व्यक्ति को खाई में नीचे पकड़ नहीं सकता जब तक वह उसके साथ स्वयं खाई में उसके साथ न हो।

कई रूपों में, वाशिंगटन ने मानवीय संबंधों पर वही लागू किया जो पौलुस ने मसीहियो के आंतरिक जीवन के विषय में सिखाया था। अर्थात्, यदि हम हमारी सभी शक्तियों को हमारी पापमय अभिलाषाओं को दबाने की ओर लगाते हैं, तो भी हम हमारी पापमय अभिलाषाओं पर ही ध्यान लगा रहे हैं। हां, पापों को दबाना अच्छी बात है, एक अच्छा कार्य भी है। और पौलुस ने शरीर के पापों को मार डालने के लिए विश्वासियों को उत्साहित किया था। परन्तु पौलुस का बिंदू केवल यही नहीं था कि हम संसार के विषयों के प्रति एक नए दृष्टिकोण को अपना लें, बल्कि यह भी कि हम सांसारिक बातों की ओर से ध्यान हटाकर आत्मिक बातों की ओर लगाएं। परन्तु "आत्मिक" या "स्वर्गीय" विषय जो पौलुस के मन में थे वे संसार के साथ हमारी भागीदारी की मांग करते हैं। कुलुस्सियों 3:12-16 में उसके शब्दों को सुनें :

> करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो... एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो। मसीह की शान्ति जिस के लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो, मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो। (कुलुस्सियों 3:12-16)

स्वर्ग पर केन्द्रित होने का अर्थ है उस पर केन्द्रित होना जो स्वर्ग में चढ़ गया है, अर्थात् मसीह, ताकि जब हम पृथ्वी पर ही हैं तो उसके समान हो जाएं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और ध्यान दें, किस प्रकार के विषयों को पौलुस "स्वर्गीय" या "आत्मिक" कहता है। उनमें से अधिकांश पारस्परिक सदगुण हैं, वे सदगुण जो मुख्यत: या फिर केवल दूसरों के प्रति ही व्यक्त किए जा सकते हैं, जैसे समुदाय के संदर्भ में करूणा, दया, नमृता, कोमलता, धैर्य, क्षमा, प्रेम, और शांति। इन सदगुणों को वर्तमान संसार में सक्रिय जीवन जीने के बिना क्रियान्वित नहीं किया जा सकता।

और वास्तव में, कुलुस्सियों 3:16-4:6 में पौलुस ने उन कई तरीकों को स्पष्ट किया जिनके द्वारा विश्वासी अपने अनेक सांसारिक संबंधों के संदर्भ में भी इन सदगुणों को लागू कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, उसने लिखा कि विश्वासियों को एकसाथ भजन, गीत और आत्मिक गान गाकर एक-दूसरे को समझाना चाहिए। उसने पत्नियों को निर्देश दिया कि वे अपने पतियों के प्रति समर्पित रहें, और पतियों को कि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें। उसने बच्चों को निर्देश दिया कि वे अपने माता-पिता की आज्ञा मानें, और माता-पिता को कि वे अपने बच्चों का उत्साहवर्द्धन करें। उसने दासों को आज्ञा दी कि वे आज्ञाकारी एवं उपयोगी बनें, और स्वामियों को कि वे दासों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा यीशु, जो सबका स्वामी है, अपनी कलीसिया से व्यवहार करता है। उसने अपने लिए प्रार्थना की मांग की कि परमेश्वर उसे सामर्थ प्रदान करे जब वह सुसमाचार का प्रचार करता है। और उसने कुलुस्सियों को भी निष्ठावान और बुद्धिमान बने रहने का निर्देश दिया जब उन्हें स्वयं सुसमाचार प्रचार करने के अवसर मिलते हैं। ये सभी निर्देश "आत्मिक" या "स्वर्गीय" विषयों से संबंधित हैं। परन्तु फिर भी इनका क्रियान्वयन वर्तमान संसार में सक्रिय सहभागिता के द्वारा ही किया जा सकता है।

पौलुस के लिए स्वर्गीय या आत्मिक रूप से केन्द्रित होने का अर्थ इस बात को दर्शाना है कि इस समय स्वर्ग कितना अद्भुत है, और वर्तमान संसार को स्वर्ग के समान बनाने के मार्गों को ढूंढ़ना है। यह हमारे नए आत्मिक स्वभावों और उन भले कार्यों पर ध्यान लगाना है जो उनके अनुसार उपयुक्त हों। यह दूसरों से प्रेम करना, दूसरों को क्षमा करना, दयावान, कोमल और नम्र बनना है। यह दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना है जैसा यीशु उनसे व्यवहार करता है। सारांश में, आत्मिक विषयों पर केन्द्रित रहने के लिए हमें इसी समय, इसी स्थान अर्थात् इसी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के निर्माण पर ध्यान देना है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने प्रेरित पौलुस और कुलुस्से के विश्वासियों के साथ उसके संबंध को ध्यान से देखा है। हमने कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री की पृष्ठभूमि एवं उसकी संरचना और विषय-वस्तु की जांच की है। अंत में, हमने कुलुस्सियों द्वारा पौलुस से प्राप्त शिक्षाओं के आधुनिक प्रयोग पर चर्चा की है।

कुलुस्सियों को लिखी पौलुस की पत्री में आज के संदर्भ में हमारे लिए अनेक महत्वपूर्ण बातें हैं। यह हमें मसीह की सर्वोच्चता के बारे में और उसके प्रेरितों एवं उनकी शिक्षाओं के बारे में भी बताती है जिनको हमें उच्च सम्मान प्रदान करना चाहिए। यह परमेश्वर के राज्य में हमारी भूमिका, और जिस महान् उद्धार का हम आनन्द उठाते हैं, को स्पष्ट करती है। और यह हमें स्वर्ग में भागीदार लोगों के रूप में आत्मिक स्वभावों के साथ जीने और हमारी स्वर्गीय नीतियों को पृथ्वी पर लागू करने के लिए कार्य करने हेतु उत्साहित करती है। जब हम हमारे मसीही जीवनों में आगे बढ़ते हैं तो इस पत्री में पौलुस द्वारा सिखाई गई बातों को याद रखना हमारे विश्वास को बनाए रखने, और परमेश्वर के राज्य के उपयोगी एवं धन्य सदस्यों के रूप में जीने में सहायता करेगा। अत: यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि पौलुस की कारावास की पत्रियां निरंन्तर नैतिक जीवन पर बल देती हैं। एक ओर यह तथ्य कि मसीह राजा है, उसकी आज्ञा मानने के लिए हमें प्रेरित करता है। दूसरी ओर यह तथ्य कि हम मसीह के साथ जुड़े

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हुए हैं, हमें प्रेरित करता है कि हम उसके चरित्र के अनुसार जीवन जीएं। आइए पहले हम नैतिक रूप से जीवन जीने, जो मसीह के राजत्व से निकलता है, के दायित्व पर ध्यान दें।